अभी कुछ दिन लगेंगे

जया गोस्वामी

अभी कुछ दिन लगेंगे

ग़ज़लों का संग्रह

जया गोस्वामी

प्रथम सस्करण 1995
द्वितीय सस्करण 1996

प्रकाशक :
मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी-8, पृथ्वीराज मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर - 302 001

आवरण-रेखांकन :
हेमन्त शेष

लेजर टाइप सेटिंग :
वी एम कम्प्यूटर्स
ज्योति नगर, जयपुर

मुद्रक :
पंपुनार प्रिंटर्स
जयपुर

मूल्य : 80/-

Abhi Kuchh Din Lagenge
(A Collection of Hindi Ghazals)
By Jaya Goswami

हिन्दी ग़ज़ल के सोपान पर एक कदम यह भी

श्रीमती जया गोस्वामी को काव्य-रुचि सम्भवत विरासत मे ही मिली है, क्योंकि उनके स्वनामधन्य पिता भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री सस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान जयपुर का नाम सुशोभित कर चुके है। जया जी कविता के साथ जुडी नही रही परन्तु, इस ओर इनकी रुचि अवश्य ही रही है। इसी काव्य-रुचि ने उन्हे हिन्दी मे गजल लिखने को प्रेरित किया।

गज़ले पढने से लगता है कि जया जी के अन्तर्जगत मे काव्य-रुचि का यथेष्ट मात्रा मे समावेश है।

गज़ल उर्दू काव्य की एक शैली है। इस शैली का अपना एक अलग व्याकरण है। हिन्दी मे कई कवियो ने गजल का अनुकरण किया है। बहुधा गजल के लय पक्ष पर ही हिन्दी कविता का ध्यान रहा है और अभिव्यक्ति की सहजता का। गजल मे यह सुविधा है कि मनोभावो को सहज रूप मे प्रकट किया जा सकता है। जया जी की गजलो मे भी यह सब कुछ देखने को मिलता है। एक नमूना है—

इन दरख्तो को खा गई दीमक
पिछले जन्मो मे आदमी होगी

जया जी ने गजल की प्रकृति को पहचाना है। यह ऊपर के नमूने से ज़ाहिर है। इसी सिलसिले मे और नमूना देखा जा सकता है—

खुशियाँ तो दूर थीं ही, ग़म भी नही रहे
कितने ही सब्र रुह मे झेले तमाम उम्र

हिन्दी कविया की गजलो को उर्दू गजलो से अलग करने का प्रयास यही है कि हिन्दी गज़लो मे हिन्दी म शब्द और अलकार शास्त्र के प्रयोग अधिक होते है, हिन्दी काव्यो मे वर्णित प्रकरणो का समावेश भी किया जाता है। जैसे—

"पता नही इस रामराज की यह लका है या किष्किन्धा" हिन्दी शब्दो के प्रयोग का उदाहरण है— 'तब हवा का कितना उम्दा' फिर भी देखने मे यह आया है कि हिन्दी गज़ल लिखने वालो को उर्दू शब्दो का सहारा लेना ही पडता है।

गज़ल उर्दू शायरी का रूमानी इज़हार है। जया जी ने गजल के इस स्वभाव को पहचाना है और माना है। उनकी गजलो मे चुभन और दर्द का समावेश यथेष्ठ रूप मे है।

यह मानना पडेगा कि श्रीमती जया गोस्वामी ने एक अच्छा माध्यम चुना है और उनकी पकड़ अच्छी है। क्या ही अच्छा हो कि वे अपना प्रयास जारी रखे और गायक उनको ग़ज़लें गाने लगे। इसके लिए अधिक साधना करनी होगी। यदि गायको के कण्ठ मे उनकी गज़लें पहुँच जाएँ तो उनकी बडी सार्थकता होगी।

ई-29, लाजपत मार्ग,
सी-स्कीम, जयपुर
जुलाई 26, 1995

कर्पूरचन्द कुलिश

मूर्धन्य कवि और अपने अध्यापक
स्व. श्री कमलाकर 'कमल' गुरू जी की स्मृति में

— जया

एक

जो दबी थी राख वह छितरा गई है
एक चिनगारी हवा में आ गई है

अब नहीं, मन में सुलगने की ज़रूरत
यह कलम की आग काग़ज पा गई है.

बदगुमानी का धुआँ था जब फ़िज़ाँ में
धुन्ध आँखों में तभी से छा गई है.

साफ़ कर लो मन, बदल दो सोच अपने
तोड़ दो बंदिश कि जो मठिया गई है

जो लपट बुझ कर चिलम सुलगा रही थी
वो मशालों को यहाँ धधका गई है

क्यों सहे मायूसियों की सर्द ठिठुरन
जब चमकती आग मन को भा गई है.

दर्द का कोहरा अंधेरा कर गया था
लौ सृजन की रास्ता दिखला गई है.

दो

कौन जाने किस तरह पाटी गई है खाइयाँ
एक पत्थर हट गया तो खुल गई गहराइयाँ.

क्या कहर बरपा यहाँ, हर शख्स गूगा हो गया
सिर्फ पत्थर बज रहे है, चीखती तनहाइयाँ.

दिल-दिलो मे दूरियाँ जो बढ गई खाई बनी
जल यही ठहरा हुआ है, जम गई है काइयाँ.

कैक्टस है दूर तक काटो भरे सब रास्ते
बौर आँधी मे झरे गर्दिश बनी अमराइयाँ.

दाँत पैने कर रहे है सर्द खू वाले मगर
चल पडे गिरगिट, व अजगर ले रहे अगडाइयाँ

एक सन्नाटा यहाँ, फाजिल हुआ है हर तरफ
दस्तके दहशत, डराती है यहाँ परछाइयाँ.

जिस शहर मे मौत भी इज्जत का वायस थी कभी
उस जगह अब ज़िन्दगी का नाम है रुसवाइयाँ.

तीन

हो गई कम आपसी हमदर्दियाँ
फ़ासले ही फ़ासले है दर्मियाँ

जम रहे है बर्फ़ मे रिश्ते सभी
रूह तक उतरी हुई है सर्दियाँ.

घुल गई ख़ूं मे सफेदी इस क़दर
बन गई चट्टान दिल की नर्मियाँ.

फर्ज के जज़्बे धुआँ बन कर उडे
हर फ़िज़ाँ मे मुब्तला खुदगर्ज़ियाँ.

उग गये काँटे हसद के हर तरफ
फट गई तहज़ीब की सब वर्दियाँ

ढूढने पर भी कही दिखती नही
मुस्कुराते प्यार की सरगर्मियाँ

ढूढ़ती है एक झरना रेत मे
हाय रे, इस प्यास की हटधर्मियाँ.

चार

आँधियों के इस शहर में कुछ हरा होता नहीं
कद पहाड़ों का मिटा है कोहरा होता नहीं

है शहर वह तंत्र, जो बन्धक बनाता ज़िन्दगी
लूट लेता उम्र भर, पर बोहरा होता नहीं.

दूसरों के खूं-पसीनों में बढ़ा है जो बदन
माँस का ऐसा समुन्दर छरहरा होता नहीं.

यों मुलम्मे से तो लोहा भी चमक जाता, मगर
मेल सोने का न हो तो सुनहरा होता नहीं

साफगोई के बहाने लाख ढँक लो कालिखें
अर्थ उन खुदगर्ज़ियों का दोहरा होता नहीं.

दर-बदर चल कर अदावत अब सड़क तक आ गई
रू-ब-रू की जंग में तो मोहरा होता नहीं.

जो बिना फन, डंक के डँस जाय सब कुछ
आदमी से तो विषैला गोहरा होता नहीं.

पाँच

जल को तरसे है यहाँ खून पसीनो वाले
आसमा छूने लगे लोग ज़मीनों वाले

जो उठाते थे कभी खान से पत्थर सर पर
बन गये आज वो नायाब नगीनों वाले.

एक अलग दौर तमाशों मे चला आया है
साप की फूक पे-अब नाचते बीनों वाले.

न थी ज़मीन, तो हाथों मे उगाई फसले
ले गये हाथ का बाजार मशीनो वाले.

तेज़ रफ्तार कहाँ जा के रुकेगी बोलो
पल मे निपटते है सभी काम महीनो वाले.

सबसे आगे थे जो इन्साफ दिलाने के लिये
शीशे मे ढल गये वो फौलाद के सीनों वाले.

पार उतरने के लिए डूब रहे है ये ग़रीब
अब तो कुछ इनकी मदद कर, ओ सफीनों वाले.

छः

जो लोग ध्यान में हरदम कबीर रखते है
एक चादर की तरह ही शरीर रखते है.

हम तो रखते है हथेली पे नियामत सारी
लेकिन दिल में कोई सूफ़ी फकीर रखते है.

सुना है, दूध तथा दिल फटे नही जुडते
फटा हो दूध तो क्या, हम पनीर रखते है.

इस सभा में है बहुत रंग बदलने वाले
इनमें हम खुद को ही सबसे हकीर रखते है

उन जहीनो की तबीयत का क्या करे कोई
परायी कमान पे जो खुद का तीर रखते है.

जो धूप, बर्फ, पहाडो की आग सहती हो
उस तपी खान के पत्थर लकीर रखते है.

मान-अपमान, सुख और दु:ख रखे है बाहर
हम तिजोरी में रकम सा जमीर रखते है.

सात

जब किसी चीज की कमी होगी
तो मुलाक़ात लाजमी होगी

ऊपर आये है लोग सूखे मे
नीचे बेशक बहुत नमी होगी

जब उड़ानो को आसमा न मिले
तब ही पैरो तले ज़मी होगी

वो बुलायेगे आपको आ कर
उन के घर मे अगर ग़मी होगी

कोई दस्तक नही सुनेगे वो
ग़र फ़िज़ाँ मे खुशी रमी होगी

जब थकानो से पाँव जकड़ेगे
उम्र आकर वहाँ थमी होगी.

क्या हवाओ मे आ रही खुशबू
ये हवा फिर तो मौसमी होगी

इन दरख्तो को खा गई दीमक
पिछले जनमो मे आदमी होगी

आठ

बहुत हुआ है पुराना हिसाब, रहने दो
मेरे सवाल सुनो और जबाब रहने दो

ये जिन्दगी तो मैंने हार कर गुजारी है
अब एक दिन तो मुझे कामयाब रहने दो.

ये फलसफे ये रिसाले तो सुन लिये मैंने
अपनी कुछ बात करो, अब किताब रहने दो.

ये अंधेरा नही आदत है इन निगाहों की
उजालदान बहुत, आफ़ताब रहने दो.

ये दिल सा नर्म है, टूटा तो बिखर जायेगा
बहुत से फूल चुने, यह गुलाब रहने दो.

आज सूखा है तो क्या जल से भरा था इक दिन
कीचड मे मत भरो इसे, खाली तलाब रहने दो.

ये जो बढ़ते हुए चाँदी के तार सिर पर है
मेरा सब कुछ लो, फ़कत इन की आब रहने दो.

नौ

आँख से मोती जहाँ ढलके हुए है
बोझ पंखो से अधिक हलके हुए है.

दर्द बिखरा तो उगा है सब्र बन कर
रोक लो तो बाध दलदल के हुए है.

ये बडे मासूम पानी के थपेडे
काटते तल को, मगर छलके हुए है.

हो गये है इस तरह बदनाम आसू
पोछने पर हाथ काजल के हुए है.

बढ गये इस दौर मे ऐसे परिन्दे
जो कभी जल के कभी थल के हुए है

साथ चल पाये न दो डग आज तक भी
हमसफ़र वे क्या कभी कल के हुए है.

वक़्त की तासीर पर उम्मीद क़ायम
यो भरोसे तो नही पल के हुए है.

शुद्ध सोना हो गया है बन्द जब से
और ऊचे दाम पीतल के हुए है.

दस

जो आसमा पे रहा चांद, ग़ार में है अब
बहुत चढ़ा था समुन्दर उतार में है अब.

ये वक्त जो है, किसी के कहे नही चलता
जो बाँटता था रक़म खुद उधार में है अब.

वो रिन्द था जो फटेहाल रहा फाकों पर
मय पी रहा है कही से खुमार में है अब.

वो कह गया था कि तूफान से टकरायेगा
कल की बरसात में भीगा बुखार में है अब.

कई मकान जमीनों के कर गया सौदे
वो शख्स वक़्फ निगम के मज़ार में है अब

ये भीड, शोर शरावे ये धुन्ध ये हलचल
सुकूं कही है तो उजडे दयार में है अब.

बहुत गुमान था सोने के बदन पर उस को
सर की चाँदी से क्यों गहरे विचार में है अब.

ग्यारह

इस देश के इन्सा की पहचान कोई ले आ
आईना नही है, तो गिरहबान कोई ले आ

देते नही भरोसा पैमाने और तराजू
दरकार ये न हो, वह ईमान कोई ले आ

आधे ढँक बदन तो हर घर में नमूँदा है
आँखो में शर्म दे वो सामान कोई ले आ.

होटल में छुरी काटे है मुर्गमुसल्लम पर
मक्की से महक उठता दालान कोई ले आ.

जो वोट दे रहा, उस मजलूम के लिये तू
दो वक़्त रोटियों का ऐलान कोई ले आ.

यो है नही तसव्वुर अब राम या श्रवण का
माँ-बाप साथ हो, वह सन्तान कोई ले आ

खूँ लग गया है मुँह पर, वे शेर है बहुत से
हो बन्द सीखचों मे फ़रमान कोई ले आ.

आह किसी दुखी की जिसके दिलो को छू ले
पिछली सदी का ऐसा इन्सान कोई ले आ

मदिर मे घटियाँ और मस्जिद में अजाने है
पर, मन मे बस सके वो भगवान कोई ले आ

बारह

अब चलन है पीठ पर होते है वार
इसलिये खजर बहुत है धारदार.

हमसफ़र जो बेवजह पीछे चले
किस तरह कर पाएँ उनका एतबार.

एक तो दर्दे जिगर कुछ कम नही
पूछने को आ रहे फिर गमगुसार.

साफ़गोई का जो रखते थे गुमाँ
चुगलियो मे हो गये वे भी शुमार

जो कुतरते थे जडो को कल तलक
आज है हर शाख पर वे सब सवार.

अब बहुत मुश्किल सचाई पर यक़ीन
वे कसम खाने लगे है बार बार

उन मगरमच्छो की फितरत देख कर
मछलियाँ भी हो गई है होशियार.

तेरह

डर है कि जफाओ की, फिर बात न चल जाये
फिर ज़ख्म खुले कोई और आह निकल जाये.

फितरत फ़रेबियों की पानी का बुलबुला है
चिकनी सतह जहाँ हो उस ओर फिसल जाये.

रहती न ओट सिर पर बरसात आंधियो मे
छाते का क्या भरोसा झोंके से उथल जाये.

आते सुबह गुलो पर तितली, भवर, परिन्दे
परछाई तक नदारद जब सूरज ढल जाये

दुनियाँ ने जो दिये थे वे ज़ख्म सब हरे है
हरियालियो से शायद दिल ही है, बहल जाये

मेरा घर जला गये जो, वे थे अज़ीज अपने
कहते है अब कि बचना, कही पाव न जल जाये.

हो उम्र भर तुम्हारा एक साप, प्यार दो तो
वह आदमी नही है, जो ले के बदल जाये.

चौदह

डरे हुए है, कैसे बाँटे दर्द पराये
जब जब हमने होम किया है, हाथ जलाये.

साफ़ कर रहे थे पानी से साझा आंगन
बाहर निकले खुद कीचड में सने सनाये.

कैसे धोये हम अपनी तोहमत के धब्बे
अब तो साबुन ही दामन पर दाग लगाये.

सहज प्यार के जो मोती बाँधे हाथों में
पत्थर बन कर वे दिल पर हो गये सवाये.

बुझते रिश्तों की आतिश का ताप बढ़ाने
अब तक हमने अपने ही तन मन सुलगाये

सारे जज़्बे सुलग सुलग कर धुआँ हो गये
हम फिरते है इस धूनी की राख रमाये.

बिना तवज्जो लिये बेवजह मिटी ज़िन्दगी
जैसे चौराहे का दीप जले, बुझ जाये

पन्द्रह

दाता, तूने तो सुख दोनों हाथ उलीचे है
पर क़िस्मत की सूची मे हम सब से नीचे है

ख़ाली हाथ पसारे बैठे रहे शाम तक
मिली नही सौग़ात नियति ने दामन खीचे है.

हम ने ही खुद ली है त्रास, घुटन की आदत
तेरी क़ुदरत के तो सारे खुले दरीचे है.

तरस गये है हम तो ग़मले मे कोपल को
होगे कौन लोग वे जिनके बाग़ बग़ीचे है

बदबू देने लगे फूल अपनी ग़लती से
इनमें हम ने पानी नही, पसीने सीचे है.

साथ चले दुर्भाग्य, दर्द, काँटे, मायूसी
अब रस्ते भर ये सब आगे है, हम पीछे है.

तेरे पथरीले रस्ते मजूर किये हमने भी
ठोकर खाते बार बार, पर आँखे मीचे है.

कैसे आयें, पाँव खून से लथपथ अपने
बिछे तुम्हारे दर पर कितने साफ़ गलीचे है.

सोलह

देखना, क्या बज्म के आग़ाज होगे
कुछ अजब से साज़ पुरआवाज होगे.

फ़न बनेगे शोर, चीखे, और बकझक
मौसिकी के ये नये अन्दाज होगे.

जिस्म थिरकेगे, नशे के ताल सुर पर
जो गिरे बेहोश वे जाँबाज़ होगे.

मुख़्तसर पोशाक होगी कतरनो की
और सिर पर खूबसूरत ताज होगे.

खुश रहेगे सब मुलम्मे की चमक से
पर निख़ालिस बात से नाराज होगे

क़ायदे, अज़मत, अदब, सीरत, मुहब्बत
इस फ़िज़ाँ मे ये महज अल्फ़ाज होगे.

कल तलक जिनसे मुतारिफ़ हम नही थे
वे अजूबे महफिलो मे आज होगे.

सत्रह

भीड में पहचान अपनी भी बना ले तो चले
आ गये ग़मख़्वार, इनको आजमा ले तो चलें.

लोग चेहरों पर कई चेहरे लगा कर चल रहे
हम नक़ब दो चार चेहरों की हटा ले तो चलें.

वक्त तो हर बार हम-को छोड कर चलता रहा
कुछ बचे लमहे हथेली पर उठा ले तो चले.

लुट गया है यह चमन अब और कुछ बाक़ी नहीं
याद की कुचली हुई कोंपल बचा ले तो चले.

उम्मीद है अलगाव के बादल बरस जाएँ कभी
अमन का एक बीज धरती मे उगा ले तो चले.

बोझ है सर पर उसूलो का कहो तो बाँट लें
या किसी अनजान रहबर को थमा ले तो चले.

चल पड़ा है कारवॉ अगले पड़ावों के लिये
धुन्ध ग़र्दिश से अलग सरराह पा ले तो चले

अठारह

यो तो इस बाजार में ऐसा गजब कुछ भी नही
पर यहाँ जो बिक रहा है वेसबब कुछ भी नही.

एक मयखाना खुला है बंट रहे है इश्तिहार
है नई तहजीब पीना, गो तलब कुछ भी नही.

लोग सडकों पर पडे है, बुत इमारत में सजे
यह अजायबघर मगर इसमे अजब कुछ भी नही.

मुल्क की अपनी विरासत के लिए कुछ हो, न हो
पर सियासत के लिये लाखो अरब कुछ भी नही.

हो गई नीलाम अस्मत, बिक गई आबो-हया
लोग बोले क्यों दुखी हो बात जब कुछ भी नही.

बेच कर गैरत ख़रीदी जा रही सजधज यहाँ
है नुमाइश जिस्म की दिल में अदब कुछ भी नही.

क्या पता इतने गिरहकट थे सरे बाजार भी
क्या खरीदें इस शहर में पास अब कुछ भी नही.

उन्नीस

अंजुमन में जो अलग, नायाब से दाख़िल हुए
अब वही मौकापरस्तिश भीड में शामिल हुए.

मय न छूने की कसम लेकर गये थे होशियार
देख कर मदहोश मज़र बिन पिये ग़ाफिल हुए.

नाज़ था जिनको नज़ाकत पर, नज़र के नूर पर
नाज़नीनो के नगर मे नामज़द कातिल हुए.

हर सुबह जो फूल पत्तो पर बिखरते बेशुमार
खूबसूरत ओस के मोती किसे हासिल हुए.

लाख पतवारें उठाकर घेर लो लहरे, मगर
जो भवर मझधार के हैं वे कहाँ साहिल हुए.

जो परिन्दे घोसलो मे कौर के मुंहताज थे
उड रहे है आसमा मे जब ज़रा क़ाबिल हुए.

ज़ख्म देकर जो गये थे जान से ज्यादा अज़ीज़
फिर कहर बन कर पुराने ज़ख्म पर फ़ाज़िल हुए.

बीस

तत्र हवा का कितना उम्दा
बिना परो के उडा परिन्दा.

जो ज़मीन पर रेंग रहा था
बना आसमाँ का बाशिन्दा.

सिर्फ सियासत की चर्बी से
रीढ बिना ही चलता बन्दा.

जगह जगह कीचड फैला कर
उग जाते कुछ कमल चुनिन्दा.

पर ये कमल पत्र कीचड की
सतह नही छूते आइन्दा.

जिन सांसो ने जिस्म बनाया
वे साँसे जिस्मो पर जिन्दा.

थोथे लफ्ज़ो की महफिल मे
सच डर कर बैठे शर्मिन्दा.

यहाँ मिलाने को सुर मे सुर
साज़ नही, बजता साजिन्दा

पता नही, इस रामराज की
यह लंका है या किष्किन्धा.

इक्कीस

कैसी दुखदायी बरसातें सीले सुख, सुविधा सीली
और सुलगने लगी जिन्दगी जैसे लकडी अधगीली

जग लग गया है सपनो मे हुए दरारें सब अहसास
शब्दों को रह रह डसती है गिरती बूंदे सर्पीली

जिनमें छिप जाते थे भीतर के गुन अवगुन मटमैले
बरखा में बदरंग हो गई वे पोशाकें भडकीली

खुशियाँ तो परवानो जैसी स्नेहभरी लौ की मुहताज
कुछ पल था पखी का जीवन जब तक दीपक था, जी ली

आँखों के बिम्बो मे जिसने क़ैद किया आकारों को
वह दरपन अब खो बैठा है अपनी फ़ितरत चमकीली

सतही पानी मे परछाई गहराई का छल केवल
फ़िसलन की सडको से अच्छी है पगडडी पथरीली.

आने दो अजनबी हवाएँ परिचय की खिडकी खोलो
भीगे मन की बैचेनी मे शायद आए तब्दीली.

बाईस

लहरो मे डूबने का अब डर नही रहा
पानी बना है बर्फ़, समन्दर नही रहा.

यह क्या हुआ कि लोग बुतो मे बदल गये
कल तक धडक रहा था वो मजर नही रहा.

चाहो तो टोपियो को गिरा लो उछाल लो
ऊचा रहा था फख्र से वो सर नही रहा.

नुकसान-फ़ायदो मे रिश्ते तो बंट गये
सुख-दुख जहाँ बटा ले वो घर नही रहा.

कुछ दिन से रुक गया है बहता हुआ लहू
क्या आसपास अब कोई खंजर नही रहा.

चिमनी भरे शहर का धुआँ है ये ज़िन्दगी
ताज़ी हवा का साथ मयस्सर नही रहा.

कन्धों पे अपने तुम मुझे सोने दो दोस्तो
अब इस जगह सुकून का बिस्तर नही रहा.

तेईस

छिन गई आवाज़ जिसकी वो ज़ुबाँ हूँ मै
रंग जिसका कुछ नही वो आसमाँ हूँ मै.

वक्त के पैरो तले जो घर बिखर कर बट गया
रेत पर उस पैर का मिटता निशां हूँ मै.

छू गईं छड़ियाँ तिलस्मी फूल कांटे बन गये
हादसा गुज़रा जहाँ वो गुलिस्ताँ हूँ मै.

जब जले उम्मीद, चाहत, आरज़ूओ के महल
जो सुलगते ही उठा था वो धुआँ हूँ मै.

मोम का है दिल, मगर लौ प्यार की कोई नही
लौ बिना जलती रही ऐसी शमाँ हूँ मै.

सोचती हूँ मै शमाँ हूँ, आसमाँ हूँ, या धुआँ
गुलिस्ताँ या रेत पर जाने कहाँ हूँ मै.

ज़िन्दगी देती हुई, करके समुन्दर तक सफ़र
जिस जगह मिटती नदी शायद वहाँ हूँ मै

चौबीस

रेत मे है आबोदाना आज का
और पहियो पर ज़माना आज का

हो अगर रफ्तार कम तो ढूँढ लो
बन्द कुदरत मे ख़ज़ाना आज का

बढ रहे है मुँह जमी पर जिस क़दर
कल कहाँ, मिलता न खाना आज का

क्या करेगे बात कल की ये ग़रीब
जब नही कोई ठिकाना आज का

दोष माज़ी पर लगा कर बच लिये
क्या करोगे कल, बहाना आज का?

और ग़र बदतर हुए हालात कल
तो बयाँ होगा फ़साना आज का

नाव लाओ, कब न जाने ये हवा
बदल दे मौसम सुहाना आज का.

पच्चीस

हम को हुए नसीब न मेले तमाम उम्र,
हमने सफ़र किया है अकेले तमाम उम्र.

हम जिस जगह गए है, हवा खुश्क ही मिली
पतझड़ के खार राह मे फैले तमाम उम्र

चुन-चुन के ले गये वो खुशी, चैन, सुख, सुकून
हिस्से मे आये सिर्फ झमेले तमाम उम्र.

सब जीतते गये तो हमे हारना ही था
खेले जो खेल हार के खेले तमाम उम्र

राहत की कोशिशो मे नुकीले हुए है और
चुभते रहे जो बोल कसैले तमाम उम्र

डाले जहाँ भी हाथ तो कालिख मिली वहाँ
देखे थे गो कि ख्वाब रुपहले तमाम उम्र.

खुशियाँ तो दूर थी ही, ग़म भी नही रहे
कितने ही सब्र रूह मे झेले तमाम उम्र.

छब्बीस

आइनो मे अक्स दहशत भर रहे है आजकल
लोग अपने आपसे ही डर रहे है आजकल.

आँख धुंधली और पीले ज़र्द है चेहरे सभी
लग रहा है साँस लेकर मर रहे है आजकल.

ख़त्म है अब साफ़ पानी, फूल, पत्ते और हवा
सिर्फ बढ़ती भीड़ के मज़र रहे है आजकल.

मुस्कुराने के जतन मे रो पडे है ज़ार-ज़ार
लोग क्या, जज़्बात तक छल कर रहे है आजकल.

लाश 'विद्युत दाह-भवनो' से मुख़ातिब हो गई
क़ब्रगाहो मे हमारे घर रहे है आजकल.

आम सड़को पर चले तो कान बहरे हो गये
इस तरह के हादसे अक्सर रहे है आजकल.

लकड़ियो मे हो गये तब्दील सब के सब दरख़्त
चिमनियो मे मोर अंडे धर रहे है आजकल.

उन दरिन्दो के लिये ए काश, हो कोई सज़ा
बेहिचक जो इस चमन को चर रहे है आजकल.

सताईस

आम बादल का भर गया होगा
बन के सावन बिखर गया होगा

क्वारी धरती मे उग पड़े अंकुर
मेह सौगात धर गया होगा.

आज रह रह सिसक रही है हवा
कोई बदनाम कर गया होगा.

धूप ने इश्तिहार बाँटे है
कोहरा बेखबर गया होगा

अक्स पानी मे थरथराता है
चॉद दरिया से डर गया होगा.

आसमा भी नजर नही आता
वो छतो पर उतर गया होगा.

सुबह से है फिजा मे सरगोशी
जाने सूरज किधर गया होगा.

भीग कर ठंड खा गया शायद
हो के हलकान घर गया होगा.

अट्ठाईस

खाये फ़रेब, फिर भी मन में गिरह नही है
दुनियाँ में और कोई मेरी तरह नही है

अपने जमीर से ही लडना पडे हमेशा
इससे बुरी जहाँ मे कोई कलह नही है

शिद्दत से जो हमारे दिल मे बसे हुए है
उनके घरो में अपनी कोई जगह नही है

टूटे हुए दिलो को कुचला है और उसने
मिटना है ये हमारा उसकी फ़तह नही है

हरदम नये दुखो की तह पर तहे उभरती
यह सिलसिला है जारी इस पर सतह नही है

दुर्दिन में वक़्त के भी तेवर बदल गए है
राते है, शाम भी है लेकिन सुबह नही है

मरना नही था बस मे हम इसलिये जिये है
वरना तो ज़िन्दगी की कोई वजह नही है

उन्तीस

नासमझ पंछी सहारा एक तेरा ढूँढ ले
पंख थक जाने से पहले तू बसेरा ढूँढ ले

इस जगह दाना न पानी क्यों भटकता दर बदर
दूर अनजाने शहर में और डेरा ढूँढ ले

चिमनियों के ये शहर भी तो उगलते है जहर
ठीक होगा पेड ग़र कोई घनेरा ढूँढ ले

तेज़ नक़ली रौशनी खंजर चुभोती आँख में
पुर-सुकूनों का अलग कोना अंधेरा ढूँढ ले.

वह खुशी जिसको सगा समझा फ़रेबी हो गई
दूसरा सुख तू ममेरा या चचेरा ढूँढ ले.

चैन से फुफकार सांपो की अगर रहने न दे
तू गरुड बन या कि अपने में सँपेरा ढूँढ ले.

गो कि अब जो वक़्त है वह सिर्फ़ लंबी रात है
रात के ही एक हिस्से में सवेरा ढूँढ ले

तीस

मन सलेटी सांवले पर तन सुनहरे है
खोखले कच्चे घरों के रग गहरे है.

इस सदी का है अजूबा यह शहर
आदमी है एक उसके बीस चेहरे है.

दरिन्दों में खुशगवारी है बहुत
पर यहाँ इन्सानियत पर सख़्त पहरे है.

सच किसी गुमनाम ख़त सा गुम हुआ
झूठ के झंडे यहाँ हर ओर फहरे है.

राह में भटके मुसाफिर अब कहाँ जाएँ
था जहाँ कोई बसेरा साप ठहरे है.

गूजती है हर गली बेबस कराहो से
चीख़ता है आदमी, इन्सान बहरे है.

इकतीस

देख, अन्तर्मन दिखाता राह क्या है
अब कोई मदिर कोई दरगाह क्या है.

गर खड़ा है तू सही अपनी जगह पर
रब समझ लेगा कि तेरी चाह क्या है.

तूर से टकरा गया था एक ज़र्रा
हौसला था वह, यहाँ अफवाह क्या है.

तू किनारे से अगर आगे बढ़ा तो
खुद समन्दर की बताता थाह क्या है.

उम्र चाहे आह की हो सौ बरस की
हो नही कोई असर तो आह क्या है.

लाख आँखें प्यार की तेरी तरफ़ हो
तो अदावत की हक़ीर निगाह क्या है.

घर न हो, हमदम न हो कुछ हो न हो
तू खुदी के साथ है, परवाह क्या है.

बत्तीस

रात अंधेरी है तो अपने साये भी मग़रूर हुए है
ढलते दिन की तरह उजाले हर पल हम से दूर हुए है.

टूटे जब आँखो के सपने, आँसू भी हो सके न अपने
साथ छोड कर ये आँखो का बहने पर मजबूर हुए है.

क्या होगी मज़िल की चाहत पाँव तलक कर गये बग़ावत
पाया नही पता रस्तो का पर ये थक कर चूर हुए है.

सुख के बीज नही मिल पाये, पीडा के जगल उग आये
नागफनी के इस जंगल मे काँटे भी भरपूर हुए है.

तन के साज बजेगे कैसे, छलनी हुए बासुरी जैसे
मन-इकतारे के सारे सुर उलझन का सन्तूर हुए है.

भूल गये चाहत की क़समे, क्या होगी जुड़ने की रस्मे
स्नेह मिलन के जलसे मे अलगावो के दस्तूर हुए है.

मन को जितने घाव मिले थे वे धीरज के हाथ सिले थे
जब खो गई प्यार की मरहम वे रिसते नासूर हुए है.

बढती है तन सुख की चाहे, खुल जाती जब धन की राहे
ऐसे मे मन के सकेतक कब किसको मंज़ूर हुए है.

तैंतीस

गीता पे हाथ रखना मालिक का नाम लेना
लेकिन सचाइयों से हरगिज़ न काम लेना.

सच को मिली थी सूली अब मिलते हादसे हैं
महफ़ूज जान रख कर हाथों में जाम लेना

अपने ज़मीर को तू बेशक हलाक कर दे
पर सुर में सुर मिला कर सुविधा तमाम लेना.

सिरमौर बन गये जो काँटे ज़हर भरे हैं
इनको कमल बता कर भारी इनाम लेना.

आकाओं की नज़र से जो गिर रहा गिरा दे
मँहगा पड़ेगा वरना गिरतों को थाम लेना.

घुड़दौड़ है सुखों की तू इसमें साथ हो ले
नुकसान में रहेगा, मन पर लगाम लेना.

सत्ता परी की आँखें काजल का आशियाँ है
बेदाग रह सके तो मेरा सलाम लेना.

चौंतीस

धूम जज़्बो की नही रुखसार में
अब फफूंदी आ गई है प्यार में.

हसरते गीली हुई है सील कर
कुरमुरी लज़्ज़त नही दीदार मे

जग खाकर टूटते अल्फ़ाज भी
किस तह के हर्फ़ ले इज़हार मे.

जीत जाये जो दिलो को हार कर
वह नही जीवट किसी किरदार में.

साहिलो पर बढ गई बीमारियाँ
किश्तियाँ महफ़ूज़ है मझधार में.

बिक गये सारे शगूफे, इन दिनो
एक भी किस्सा नही बाज़ार में.

खुश्क लब में बन्द है सरग़ोशियाँ
कान चाहे लाख हो दीवार में.

अब रक़ीबो मे कोई दमख़म नही
लुत्फ़ क्या है बेवजह तकरार मे

रख रहे थे जो कि पल-पल का हिसाब
वक्त जाया कर गये बेकार मे.

पैंतीस

डूबते कब तक बचेगे सिर्फ़ तिनको के सहारे,
घिर गये हम तो भँवर में रह गये पीछे किनारे

जब चले थे नाव थी, पतवार थी, सब साथ ही थे,
क्या बिगाड़ा था किसी का, जो डुबोया बीच धारे.

एक सन्नाटा हमारे पास ही आकर रुका था,
पर समझ पाये न हम तूफ़ान के अग्रिम इशारे.

जो लुभाती थी, बनी है, आँधियां शातिर हवाएँ,
ले गई बरबस उडा कर पाल जितने थे हमारे.

दिल वही, धड़कन वही है, क्या बदलता कौन जाने,
आँख के कंकर बने है, जो रहे थे प्राण प्यारे

रूप पर मंडरा रहे जो, वक़्त बीता घर गये वो,
आन पर घर छोड़ आये, वे कहाँ जाएँ विचारे

उम्र है ऐसा जुआ हर रोज़ कुछ खोता यहाँ है,
मौत ने जीता उन्हें जो ज़िन्दगी का दाव हारे.

छत्तीस

मशविरे सारे सुलह के ख़ार से गडने लगे
पांव जितने पास आये फासले बढ़ने लगे

वो सुनाते ही रहे शिकवे शिकायत औ' गिले
बात हमने की तो चेहरे पर शिकन पडने लगे

आदते अलगाव की यूं बन गई है कुदरती
हौसले नज़दीकियों के खुद बखुद लडने लगे

जब परिन्दो मे नबादुर की कशिश पैदा हुई
धुन्ध आंखो मे समाई और पर झडने लगे

बुतपरस्ती ने किसी शै को कहाँ पहुचा दिया
टूट कर नीचे गिरे वे फूल सर चढने लगे.

कुछ पियादे बन गये शहबा जो मौक़ा देख कर
एक शह क्या हो गई, हर चाल पर अडने लगे

किस क़दर ग़फ़लतज़दा है आजकल के सुख़नवर
पढ़ रहे थे शेर अपना, मर्सिया पढने लगे.

सैंतीस

हम मिट चुके, अब और तबाही का डर नही
टूटे हुए शज़र मे नमी कारगर नही

झेली है इतनी आग कि काले हुए है हाथ
इन पर हिना के रंग का होगा असर नही.

डाली जहाँ निगाह नज़ारे बदल गये
मुझ को तो एक फूल भी आया नज़र नही

जलती शमा पे खुश है पतंगे, ये भूल कर
ऐसी किसी खुशी की होती उमर नही

वह शख्स क्या करेगा ज़मी-सरहदो की बात
वो खुद कहाँ खड़ा है उसे यह खबर नही

भटके हुए है प्यार के राही, रहे कहाँ
मिलते बहुत मकान मगर कोई घर नही

मेरी ग़ज़ल मे अब न रदीफ़ और न काफ़िया
ये दर्द की लहर है, जिसमे बहर नही.

अड़तीस

पाँव तेरी ओर लाये आदतन
हाथ न दर खटखटाये आदतन.

तू न था, पर हाथ मे खत देख कर
फिर कबूतर पास आये आदतन.

बन्द मैख़ाने की राहो पर क़दम
बिन पिये ही लडखड़ाये आदतन.

बेखुदी मे मील पत्थर देख कर
जिस्म सज़दे मे झुकाये आदतन

जब किसी ने नाम तेरा ले लिया
जख़्म सारे सनसनाये आदतन.

दे गया क़ासिद फटे ख़त हाथ मे
ले लिये, सर से लगाये आदतन.

बँट रहे थे जब कि खुशियाँ और ग़म
हम ने उन मे ग़म उठाये आदतन

दर्दे-दिल की इन्तहा जब हो गई
कहकहों मे ग़म छुपाये आदतन.

उन्तालीस

क़शमक़श मे यह बिचारा दिल हुआ है
सच को सच कहना बहुत मुश्किल हुआ है.

बात निकली तो बिना पर के उडी है
एक लबा ताड छोटा तिल हुआ है.

जो कभी अच्छे दिनो मे रहनुमा था
दुश्मनो मे दोस्त वो शामिल हुआ है.

पैरहन तक बन गये है एक दहशत
लग रहा है आस्ती मे बिल हुआ है.

कुछ उसूल औ' ऐब दुनिया मे बटे है
कौन जाने क्या किसे हासिल हुआ है.

बन गया माहिर अगर लफ़्फ़ाजियों मे
शख़्स वो इस दौर के क़ाबिल हुआ है.

तालियों मे छिप गए अल्फ़ाज झूठे
वाक़या ऐसा सरे महफ़िल हुआ है.

चालीस

रुख बदलना आ गया हम को ज़माना देख कर
हम हुए मसरूफ खुद, उनका बहाना देख कर.

क्या पता था तब, सरे बाज़ार हम लुट जायेंगे
रह-गुज़र तक आ गये उनका ठिकाना देख कर.

भूख हद के पार लाई थी परिन्दों को, मगर
आ गये सैयाद उनका चहचहाना देख कर.

कब कहर बरपा करेंगी ये घटाएँ, क्या खबर
आप नाहक आ गये मौसम सुहाना देख कर.

क्या भरा है बोतलों में कुछ उन्हें मालुम न था
लोग तो गाफिल हुए लेबल पुराना देख कर.

अब तजुर्बे दे गये हमको नतीजों का शऊर
कुल फ़सल पहचान लेते, एक दाना देख कर.

कौन जानेगा छिपा है दर्द का दरिया यहाँ
बदगुमा है लोग, मेरा मुस्कुराना देख कर.

इकतालीस

वक्त की रफ्तार जानी सीढियो पर
चढ-उतरने की रवानी सीढियो पर

प्यार के अंकुर महकते जब दिलो मे
गुल खिलाती रातरानी सीढियो पर.

नाम लिखते थे कभी दीवार पर, वो
मिल गई यादे पुरानी सीढियो पर.

हमसफ़र की बेवफ़ाई लिख गयी है
इन्तजारो की कहानी सीढियो पर.

मंज़िलो मे बट गया है आदमी अब
ढल रही सारी जवानी सीढियो पर.

फ़िसलने टूटी कगारे और ग़र्दिश
वक़्त की ये है निशानी सीढ़ियों पर.

दे गई जब उम्र पाँवो को थकाने
रुक गई है ज़िन्दगानी सीढ़ियों पर.

बयालीस

पाँव इकदम उस जगह पर रुक गए
गो, न थी कोई वजह, पर रुक गए.

हादसों का डर बढा है इस कदर
खोलते ख़त हाथ तह पर रुक गए.

खौफ़ से पत्थर बनी हो बुलबुले
उडते-उड़ते इस तरह पर रुक गए.

डूबते थे जो, नदी के पार है
तैरने वाले सतह पर रुक गए.

उस अदालत मे दिखा इन्साफ़ पर
फ़ैसले बेजा ज़िरह पर रुक गए

हार मे भी जो बुलदी पर रहे
वे इरादे अब फ़तह पर रुक गए.

भूल भी जाते सितम उनके, मगर
हौसले मन की गिरह पर रुक गए.

तियालीस

जुड न पाए जो ज़मी से हंस, पाँखो पर जिए है
खुशतरक है वे परिन्दे जो कि शाख़ो पर जिए है

रोशनी ताज़ी हवा या आसमाँ से बेखबर
क़ैद तयखानो मे रह कर हम सुराख़ो पर जिए है

सुर्ख़रू है वे जिन्हे आग़ोश अपनो का मिला
हम किसी की सिर्फ़ दानिशमन्द आँखो पर जिए है

आँधियो से जो डरे वे टिमटिमा कर बुझ गए
आन पर ज़िन्दा है जो जलती सलाखो पर जिए है

है बहुत से लोग जिनको सब मुरादे मिल गई,
एक हम भी है कि जो बस इत्तिफ़ाक़ो पर जिए है

चवालीस

पूछते हो लुट चुकी अस्मत कहाँ है
देखना पहले कि खुद औरत कहाँ है.

छोड दे जो पेड को फल लूट कर भी
वहशियो की ये भला नीयत कहाँ है.

क्या फ़रेबी छोड़ते कोई निशानी.
फिर सबूतो के बिना तोहमत कहाँ है.

दीमके है ये, कुतरती है जड़ो को
शाख पर आ जाँय ये हिम्मत कहाँ है.

क़त्ल तक भी जब नज़रअन्दाज होते
तो किसी अंजाम की दहशत कहाँ है.

जो हिफ़ाजत का लिया करता था ठेका
उस रसूख़ेदार की ग़ैरत कहाँ है.

क्यो कुचल जाती कली खिलने से पहले
निगहबानी की किसे फ़ुरसत कहाँ है.

न्याय पाने गर गये तो देख लेना
और इससे भी बुरी ज़िल्लत कहाँ है.

यह इलाक़ा है दरिन्दो के क़हर का
इस जगह आवाज़ की ताक़त कहाँ है.

घर मिला है एक, औरत को यहाँ, पर
सिर्फ़ दीवारे उठी है, छत कहाँ है.

पैंतालीस

संवेदना की मौत पर रोऊ कि मुसकाऊ
या कि कन्धों पर उठाऊ दफन कर आऊ.

उसूलों को खा गये बेलौस समझौते,
खोखले अहसास को लेकर कहाँ जाऊ.

जिन लगावों की किरच चुभती रही है
आज पूरा तोड कर कचरे को हटवाऊ.

कुछ इरादे मोम में लिपटे हुए है
लौ बग़ावत की कहीं से ढूढ कर लाऊ.

एक चुप्पी बुन गई घनघोर सन्नाटा
ओढ लूँ, शायद इसी से सोच ढँक पाऊ.

महक दे कर जल चुकी वह धूप-दत्ती हूँ
फ़र्क क्या अटकी रहूँ या फिर बिखर जाऊँ.

छियालीस

राह, गली गॉव, डगर चीख रहे है
दौडती सडकों पे बजर चीख रहे है

ये शाख़ ये पत्ते ये दरख़्तों के कटे सर
ऐसे आते है नज़र चीख़ रहे है.

धुन्ध भरे वक्त को कन्धों पे उठाये
बोझ तले शामोसहर चीख़ रहे है.

'दम घुट के मरे मौ' ये ख़बर बेचने वाले
'आज की ताज़ा ख़बर' चीख़ रहे है.

एक तरन्नुम में गज़ल गा रहे थे जो
क्या हुआ उन पे असर चीख़ रहे है.

नींद, मुकुनों मे रहो दूर, ख़बरदार
रात को बारह के गज़र चीख़ रहे है.

और कहाँ तक यूँ बढ़ायेंगे हम वजूद
तंग ज़मी पर ये शहर चीख़ रहे है.

सैंतालीस

बात यदि तीखी लगी हो, तुम न उसकी तीख लेना
हो गये जो दूर तुम से, तुम उन्हे नजदीक लेना

हस चुनता जिस तरह जल सम्पदा से सिर्फ मोती
शब्द कैसे भी रहे तुम अर्थ उनका ठीक लेना

बात फैली तो हवाओं मे रगोली सी उडेगी
रग भरना बाद मे, पहले सतह की लीक लेना

जो यहाँ बोया गया है सौ गुना होकर उगेगा
तुम परिष्कृत बीज बोने की नई तकनीक लेना

फूल चाहोगे अगर, अपमान के काँटे मिलेगे
बन्द रख कर होठ अपने, सिर्फ मन मे चीख लेना

न्याय का घर है, मिलेंगे फ़ैसले कुछ देर से ही
जब कभी अन्धेर देखो, दूसरी तारीख लेना

भाग्य का वरदान है सुख, छीनना संभव नही है
सुख चुराने से भला है आँसुओं की भीख लेना

तुम हँसे तो सब हँसेगे किन्तु रोओगे अकेले
इसलिये आँसू छिपा कर मुस्कुराना सीख लेना.

अड़तालीस

जो गिरह बन गई थी खलक मिट गई
वह खटकती रही अब तलक मिट गई

दो दिलों के सफ़े पर रही नक्श जो
चाह के दस्तख़त की हलक मिट गई

आज अच्छा हुआ फट गये नामचे
वह सनद जो रही मुस्तहक़ मिट गई

बन गये अजनबी अक्स पहचान के
आइने में पुरानी झलक मिट गई

हो गई खुश्क जज़्बात की बदलियाँ
अश्क की बूंद तेरे पलक मिट गई

यों, बदस्तूर हैं झील, तालाब, नदियाँ
मगर तिश्नगी की [illegible] गई

उलझनों और गुत्थ[illegible]
इस ज़मीं ने छुआ जब [illegible]

उनचास

सूखे पत्ते खनकाओ तो बात करेंगे
सन्नाटे भी तुम चाहो तो बात करेंगे

दर्द अजब है, इन्हे कुरेदो तो चुप होंगे
ख़ामोशी मे दफनाओ तो बात करेंगे

आग छुपा कर भी ये पत्थर सुन्न पडे है
इन पर पत्थर टकराओ तो बात करेंगे

खुद को राख बना कर सोये है अगारे
राख ज़रा सी उकसाओ तो बात करेंगे

अभी तुम्हारे ऊपर सपनो का खुमार है
अगर होश मे आ जाओ तो बात करेंगे

रूठे है जो बन्द होठ खोये से गुमसुम
इन्हे प्यार से दुलराओ तो बात करेंगे

हम क्या बोले तुमको रश्क भरी महफ़िल मे
कभी अकेले मे आओ तो बात करेंगे.

पचास

दिख न पाया कुछ, कि टूटा सिलसिला क्या
अन्दरूनी बात का कोई गिला क्या

ढह गई उम्मीद की बनती इमारत
अक़ीदत की नीव के नीचे हिला क्या.

टूट जाते रोज़ जब दिल ही हजारों
चाह या जज्बात का फिर फैसला क्या

हट गई जेहनी खलल सी खुशफहमिया
कौन जानेगा रहा था हौसला क्या

शाख से तोडा गया है फूल, आखिर
वो मिटेगा ही, खिला या अधखिला क्या.

बढ़ गई है और भी दुश्वारियाँ अब
हो गया उनमे न जाने मुब्तला क्या.

ढूँढ़ते थे जो भरोसा आदमी में
पूछता है दिल बताओ वह मिला क्या.

इक्यावन

जब नदी की धार मे दस दस मुहाने हो गए
इस जमी पर बाढ के चर्चे पुराने हो गए

हो गये बंजर सभी एहसास, सूखी है नजर
चाह की कोई नमी देखे ज़माने हो गए

उन दिनो नाकामयाबी का सबब भी एक था
अब ग़लत अजाम के लाखो बहाने हो गए

ग़र हुई शिरकत किसी दमदार ऊंचे तख़्त से
बेसुरे अल्फ़ाज़ भी कौमी तराने हो गए

साफ़गोई से रवायत थी हमे, पर अब नही
इस जुनूँ से जब सभी अपने बिराने हो गए.

सीखते थे जो अभी सरगम, कोई सुर पा गए
वे उसी सुर-ताल के नामी घराने हो गए.

खिल गये है गुल इरादो और वादो के यहाँ
लो चलो कुछ देर तो गुलशन सुहाने हो गए.

बावन

ओट से सूरज दिखाये वो मुझे घन चाहिये
हाथ कंगन देखने को एक दरपन चाहिये

साफ़ कहने मे हुए बदनाम तो मालुम हुआ
बात मे सच हो न हो मधु और मक्खन चाहिये.

दिल से दिल को राहते है, लोग ये कहते मगर
हर सास मे महसूस होती हो वो धड़कन चाहिये.

प्यार पर पथराव की जग मे पुरानी रीत है
झेलने को यह कहर मजबूत दामन चाहिये.

क्या करेगे मोम के आसू किसी रणक्षेत्र मे
सह सके हर घात वह फौलाद का तन चाहिये.

ठोस सिक्को मे ढले है मूल्य सब अपनत्व के
आज जीवन का हमे कुछ और दर्शन चाहिये.

चाँद जैसी रोशनी का बिम्ब भी कोई दिखे
पूज ही लेगे उसे यदि व्रत समापन चाहिये.

तिरेपन

सूर्य क्या देखे टगा है अर्श पर
धूप अपनी है, यही है फर्श पर

क्या किया, कल क्या करेंगे, क्यो कहे
बात कर ले आज के सघर्ष पर

नीव भौतिक लब्धि की होती सुदृढ
क्या कभी बनते भवन आदर्श पर

बन्द है कम्प्यूटरों मे सोच सब
लग रहा प्रतिबन्ध विचार विमर्श पर

आप हर्षित हो सको हो लो अभी
क्या पता लग जाय मीटर हर्ष पर

उम्र बढती ज़िन्दगी घटती मगर
आदमी खुश है इसी उत्कर्ष पर

एक फिर बदलाव आया इस बरस
कम हुई सिरहन बदन के स्पर्श पर

समय के मुखपृष्ठ पर इतना हुआ
एक संख्या जुड गई गत वर्ष पर.

चौपन

आओ, बेफ़िक्र हो लिया जाये
एक यह काम भी किया जाये

चैन, आराम और फुरसत के
खोये लमहो को फिर जिया जाये

खुश-तसव्वुर की मौज तक कोई
न गया हो तो शर्तिया जाये

बद तनावो से फट गया तो क्या
फिर से यह पैरहन सिया जाये

यूँ ही कम है सफ़े सुकूनो के
फिर क्यूँ बेकार हाशिया जाये.

उम्र की बेख़बर हथेली से
बह गया वक्त जो, पिया जाये

लो चले आज रक्सगाहो पर
जहाँ हर शख़्स शौकिया जाये

मन मे हर ओर चल रही हो ग़ज़ल
रदीफ़ आये, काफिया जाये

या करें कुछ न, सिर्फ सुस्ताएँ
हर सफ़र बन्द कर दिया जाये.

पचपन

शब्द तन, और अर्थ है कृति की जवानी
एक रचना कर्म जीवन की निशानी.

वेदना की भूमिका का सुख समापन
सृजन में पड़ती प्रसव-पीडा निभानी.

है सभी अनुरक्ति के आलेख नीरस,
धड़कनों की शीघ्रलिपि जिसने न जानी.

चित्र-उपमित रूप का आमुख अगर हो,
मोह की भाषा किसे पडती सिखानी.

वर्जना के छन्द बन्धन हो गये तो,
बहुत दुष्कर स्नेह-शब्दों की रवानी.

हो अगर मुखपृष्ठ पर विश्वास अंकित
कथ्य की प्रस्तावना किसको दिखानी.

आयु के अध्याय अनुमोदित हुए है,
आवरण-आलोचना अब है लिखानी.

ज़िन्दगी प्रारूप है स्मृति-संकलन का
और यादें ग्रन्थ की अनुपम कहानी.

सत्तावन

दु:ख-सुख में एक सा विश्वस्त होना ही उचित है
सुख छलावा है, दुखों में व्यस्त होना ही उचित है

द्वेष और अन्याय के प्रतिकार में सक्षम नहीं जो
उस दबे व्यक्तित्व का भयग्रस्त होना ही उचित है.

प्रगति के नवमूल्य, नीर-क्षीर की प्रक्षालन क्रिया में
रूढ़ि के जर्जर घरों का ध्वस्त होना ही उचित है.

समय के पद-चिन्ह रुक पाते न अवसर की नदी में
समय से पिछड़े कदम का त्रस्त होना ही उचित है.

स्वस्थ्य स्वर्णिम व्यवस्था के सूर्य का आकाश हो तो
दुर्ग्रहण के चन्द्रमा का अस्त होना ही उचित है.

प्रेम और विश्वास का प्रतिदान अब कोई नहीं है
बाट कर उनको स्वयं आश्वस्त होना ही उचित है.

भीड़ के जंगल, कपट के नाग सह अस्तित्व में है
इसलिये विषदंश का अभ्यस्त होना ही उचित है.

अट्ठावन

प्रश्न लंबित है अब उत्तर जानना है
समय के आदेश की अनुपालना है.

कुछ सही कुछ निरर्थक उत्तर मिलेंगे
बात को सन्दर्भ-तल तक छानना है.

उम्र भर जो हाथ देने में थके है
क्या उन्हें प्रतिदान की संभावना है.

पांव अक्षम, साथ लाठी तक नहीं
उनकी नहीं, यह आयु की अवमानना है.

हाथ उठे तो सिर्फ आशिष में उठेंगे,
ले न ले यह आपकी मनभावना है.

बीज बोये, वृक्ष सींचे, फल मिलेगा
क्या कृषक की यह अनधिकृत चाहना है.

कुछ नहीं, यह एक अविरल प्रक्रिया है
आज जो बोया उन्हें कल काटना है.

आयु सन्धि परिचयों का दौर ऐसा
परिजनों को इस समय पहचानना है.

उन्सठ

देखने मे कमल-पोषक पक है हम,
वस्तुत राहू-ग्रसित मयक है हम.

अनगिनत सम्राट हमने ही बनाये
किन्तु अब तक वृत्तिभिक्षुक रंक है हम.

कल तलक जो ज्ञान दर्शन से भरे थे
आज अप्रचलित हुए श्रुति अक है हम.

देखती लुटते हुए मधु-सम्पदा को,
उस अवश मधुभक्षिका के डक है हम.

कुछ नही है शेष, रीते हो चुके है
अब किसी क्षति के लिए निश्शक है हम.

उड़ न पाये आश्वासन के गगन तक
आस-पंछी के विकर्तित पंख है हम

हर हवा के साथ फिर भी बज रहे है.
आदमी क्या है अनोखे शख है हम.

सात

नाग है सिंहासनों पर मनुज सोए भूमिगत हो
दश मन मे, स्मित अधर मे, कुछ नही जो असंगत हो.

लाभ और कल्याण का ही ध्यान रहता है उन्हे अब
मात्र इतना है कि वह सब स्वय का हो, व्यक्तिगत हो.

आत्म-वैभव स्तर उपार्जन मे किया अतिरिक्त श्रम जब
स्वेद-कण से पुँछ गये ईमान अपरिग्रह विगत हो.

बाँटते सम्मान जो वे लोग गुण-ग्राहक रहे है
व्यक्ति यह सब पा सकेगा किन्तु पहले दिवगत हो.

शुभ्र उज्ज्वल वस्त्रधारी नग्न से यदि लग रहे हो
इस विषय मे आपका जो भी कथन हो, वह स्वगत हो.

सोचते है वे कि ऐसे आँख मे दर्पण लगे हो,
जहाँ उनका रूप खंडित, पूर्ण बन कर दृष्टिगत हो

सुन सके स्वर आत्मा के काश, अंतिम दिन स्वय वे,
हो कही यह साज़ उस संगीत का कोई जगत हो.

इकसठ

लग रहा यो आज हम सब जान-वर है जन नही है
जी रहे है किन्तु जीवन का सुखद स्पदन नही है.

स्वार्थो की गन्ध छिप पाती न कृत्रिम इत्र से भी
एक सूखा काठ है हम अब कोई चन्दन नही है

आत्मरत है या नदी के द्वीप से खाली पड़े है,
साथ परिजन है स्वजन है स्नेह का बन्धन नही है.

मित्रता मे भी गले मिल कर यही लगता कि जैसे
द्रव्य अनुसंधान है यह स्नेह आलिंगन नही है.

हाथ माथे पर धरे है, देख कर भ्रम मे नही हों,
मात्र यह है आत्मरक्षा नम्र अभिनन्दन नही है.

लाल छींटे उड़ रहे जो भित्तिचित्रों से धरा पर
आदमी का रक्त है यह अल्पना अकन नही है.

रो रहे जो जन, दया के स्थान पर इन से डरे हम,
इस रुदन मे शाप भी है मात्र यह क्रन्दन नही है.

बासठ

हर मौसम से आँख-मिचौनी खेली होगी धूप
जनम जनम की अपनी एक सहेली होगी धूप.

बड़े सवेरे लाल ओढ़नी में आती शरमाती
शाख-शाख में छिपती नई नवेली होगी धूप.

कभी घड़ी तो कभी बिछावन कभी चांद बन जाती
पल पल स्वाग रचाती कोई पहेली होगी धूप.

ठिठुरे अंगों में सुगंध सी भर देती सर्दी में
सांस सांस महकाती जुही चमेली होगी धूप.

गर्मी की निर्जन दोपहरी कौन बनेगा साथी
गुस्से से रूठी सी निपट अकेली होगी धूप.

वर्षा में हीरे सी दो पल चमक-चमक रह जाती
ओ बादल मत छुओ हाथ से मैली होगी धूप.

उठ जाएँगे जब दुनिया से तब भी कांधा देगी
छोड़ जाएँगे लोग, चिता पर फैली होगी धूप.

तिरेसठ

हो रहा संशय, सचाई सत्य में है
वस्तुत अब सत्य तो सामर्थ्य में है

पथ वही जिस पर महाजन चल रहे हैं
आत्म-सुख उस मार्ग के अनुकृत्य में है

दुख भुला पाते न पूजा, ध्यान, प्रवचन
हर भुलावे की कला अब नृत्य में है

विष्णु के समरूप थे तब द्वारपालक
आज स्वामी से अधिक बल भृत्य में है.

विरत अर्जुन युद्धरत क्यों कर हुआ था
सार गीता का निहित उस तथ्य में है

जानकी तक देश-निष्कासित हुई थी
न्याय का आधार केवल कथ्य में है

लड रहे क्यों बालि और सुग्रीव जैसे
फैसले का तीर तो नेपथ्य में है.

चौंसठ

ले के तुम ऋण जरूर रख लेना
देने का प्रण जरूर रख लेना

दो, न दो कुछ, मगर बताने को
एक कारण जरूर रख लेना

हर कमी को जो तर्क से ढँक ले
वो निवारण जरूर रख लेना

जो नमक है प्रतीक निष्ठा का
उसका कण कण जरूर रख लेना

आँसुओं में जो डूब कर आये
वो समर्पण जरूर रख लेना

कोई नटवर ही मांग ले भोजन
शाक का तृण जरूर रख लेना

रूप पर नक्श छोडता है समय
साथ दर्पण जरूर रख लेना

अपने भीतर भी झाँक पाओ तुम
ऐसे कुछ क्षण जरूर रख लेना.

पैंसठ

मूल्यों की मान्यता का कौन सा वह वक्त होगा
भावनाओं का प्रवचन जब यहाँ परित्यक्त होगा

आस्थाओं पर हुआ हिमपात गूँगी प्रार्थनाएँ
शब्द सारे जम गये, परिताप कैसे व्यक्त होगा

स्नेह दर्पण टूट कर प्रतिबिम्ब दिखलाते नही
तोडने की प्रक्रिया मे हाथ भी आरक्त होगा

स्वप्न है निश्शेष सूली पर टगी सवेदनाएँ,
बह रहा जो भूमि पर वह अस्मिता का रक्त होगा.

ज़िन्दगी अनुबन्ध है हर सांस ढोती विवशताएँ
एक बन्धक देह पर, है कौन जो आसक्त होगा.

बट गये सम्मान भौतिक एषणा की चौखटो मे
आत्मा का स्वत्व कितनी बार और विभक्त होगा.

पूछते है द्रोह मे अपनत्व के आकांक्षी मन
आदमी मे परस्पर विश्वास कब संपृक्त होगा

छासठ

तीव्र इच्छाशक्ति है तो भाग्य को फिर श्रेय क्यो हो
हम स्वय उपमान कोई और अब उपमेय क्यो हो

बाध दे मौलिक सृजन से हम नये सोपान नभ तक
गत समय के जीर्ण पथ का अनुसरण ही ध्येय क्यो हो

संगठन की शक्ति मानव, एकता विश्वास उसका,
एक मानव के लिए फिर दूसरा जन हेय क्यो हो

आत्म-बल की साधना मे सत्य अपना साध्य हो तो
काम्य होंगे हम स्वय भी ईश केवल प्रेय क्यो हो

ज्ञान का सागर जगत् तो सेतु जन-क्षमता अपरिमित
हम रचे इतिहास ऐसा काल भी अविजेय क्यो हो

खोज ले हम मार्ग मगल, सूर्य जैसे दुर्ग्रहो का
हो अगर संकल्प तो ब्रह्माण्ड तक अज्ञेय क्यो हो.

सड़सठ

उम्र भर आसक्ति का रथ खींचता है आदमी
स्वत्व को कर ध्वस्त आखे मींचता है आदमी

तृप्ति मन का फूल है तो कामना काटे नुकीले
फूल होते धूल, काँटे सींचता है आदमी.

तृषित मृग सा देखना उस बिम्ब को जो कुछ नहीं है
भूल अपनी जान कर ही सीखता है आदमी.

चाहता वह हाथ मे भरना अधिक दिन, वर्ष, सदियाँ,
ज्यों भरेंगे हाथ त्यों त्यो रीतता है आदमी.

एक दिन का स्वप्न जीवन, जब मिटा तो ढल गया दिन
''रोक लो जाते समय को'' चीखता है आदमी.

लोग कहते बीतता है समय, पर यह सच नहीं है
समय तो अविचल अगम है बीतता है आदमी.

छोड़ कर विद्वेष मत्सर काश इतना जान पाये,
प्यार मे सब हार कर ही जीतता है आदमी

अड़सठ

अब नही बन्धन न फल की चाह वर्जित है .
यह हरित उद्यान जनता को समर्पित है.

तोड लो ये फल अगर सामर्थ्य है तुम मे
वृक्ष ऊचे है मगर यह पथ सुरक्षित है.

सर्प जो उत्कोच के लिपटे हुए तो क्या हुआ
स्रोत उनकी गति प्रगति का सुव्यवस्थित है.

छद्म का वटवृक्ष जितना दृष्टिगत है सामने
जड कही उससे अधिक गहरी नियोजित है.

बन्द पिजरो मे कई शुक चाटुकारी पल रहे,
स्थान, पद स्तर उन सभी का राजपत्रित है.

शीर्ष पर बैठे हुए बगुले थके, पर आज भी
खाद्य की सभावना जल मे असीमित है.

वृक्ष की हर डाल पर बैठा हुआ है एक कोई
हस मन का देख कर यह तंत्र विस्मित है.

डाल पर जो फल पकेगे कल उठा लेना
हाथ मे जो आज है वह सारगर्भित है.

उनहत्तर

बीते हुए समय की कोई स्मृति नही रही
स्मृति के लिए समय की अनुमति नही रही

दिन रात यो चले कि चक्रवात बन गये
गन्तव्य मार्ग पाँव मे संगति नही रही.

कुछ हमसफ़र तो चार कदम पर बिछुड गए
कुछ के लिए हमारी सहमति नहीं रही.

लक्ष्य जिसे समझा वो बादल का चित्र था
जब पास आ गये तो वो आकृति नही रही.

हर हाल में चलने की लगन शेष थी लेकिन,
इतनी थकन मिली कि वो सम्प्रति नही रही.

बढ़ने की लालसा में सिमटते चले गये
तिल-तिल क्षरण है याद ये परिणति नही रही.

अब होंठ भी हिले तो बनी है कहानियाँ
यद्यपि कथा विधा मे मेरी गति नही रही.

कुछ थे ललित विषय कि लिखेंगे, ग़ज़ल कभी,
पर वैसे भाव-बोध की पद्धति नही रही.

सत्तर

नाम खुद मेरे लिये था श्रव्य अपना
तय हुआ अन्यत्र ही भवितव्य अपना.

नियति मेरी एक कठपुतली रही,
अवश जीवन भी बना दृष्टव्य अपना.

सोच विपयान्तर रहे प्रायः हमारे
स्पष्ट कर पाये न हम मन्तव्य अपना.

मोड इतने मार्ग मे आते रहे
सर्वदा ओझल रहा गन्तव्य अपना.

जो मिले दायित्व दे कर चल दिये
बोझ उन का बन गया कर्तव्य अपना.

एक भटकन दे गये जो भेट मुझ को
खुश रहें, वो देख कर घर भव्य अपना.

जब कभी मै इस जगत् से लौट जाऊँ
उस समय के नाम यह वक्तव्य अपना.

इकहत्तर

उग गई विष-बेल घर मे फूल झरने मे अभी कुछ दिन लगेंगे,
पड गई दीवार पर,,गहरी दरारे पर बिखरने मे अभी कुछ दिन लगेंगे.

चिर प्रतीक्षित स्वप्न सुख के तोड डाले है अचानक इस सुबह ने
स्वप्न निष्फल की हताशा से उबरने मे अभी कुछ दिन लगेंगे.

आज तो प्रतिबन्ध होठो पर, कथन पर, लेखनी पर हो गया है
लिख चुका मन शब्द, काग़ज तक उतरने मे अभी कुछ दिन लगेंगे.

शब्दवेधी बाण कितने बिंध गये है हर तरफ से मर्मस्थल तक
चोट ताज़ा है मगर ये घाव भरने मे अभी कुछ दिन लगेंगे.

सुसमन्वय के घरौंदे सस्कारित नीव पर कुछ यो टिके है
आँधियो को ये घरौंदे ध्वस्त करने मे अभी कुछ दिन लगेंगे.

बहत्तर

बढ गये विचार द्वन्द्व, द्रोह की खिची कमन्द, मूल्य सब कबन्ध बन गए
बात मे रहा न सत्य, अलग अलग कथन कृत्य, लोग जरासन्ध बन गए

स्वार्थ के अटूट जाल, फस गये कई सवाल, पा सके न धूप न्याय की
आत्म श्रेय मे प्रवृत, वर्तमान राष्ट्र-धृत, आँख थी निरध बन गए

क्या हवा चली अजान, उठ गये सभी मकान, स्नेह की विदीर्ण भूमि से
उम्र भर जिन्हे जिये, सौख्य के लिये किये, यत्न कुप्रबन्ध बन गए

शुष्क गद्य से निकल, ढूंढते रहे ग़ज़ल, किन्तु शब्द राह खो गए
बेसुरा हुआ समय, लुप्त गीत-काव्य-लय, दिन कठिन निर्बंध बन गए

काश, प्यार की सुवास, बिखरी हो आसपास, मन तरुचन्दन समान हो
जो भुजग हो कि खग, बाटते रहे महक, टूट कर सुगन्ध बन गए.

तिहत्तर

सोच अनजाना हृदय की गाँठ कसता है
आज रिश्तों में कसैली एकरसता है.

टूटते विश्वास-दर्पण, है दरारी भावनायें,
अनवरत उठती कसक मन की विवशता है.

जब नहीं अपने, पराये तो पराये है
अन्तत. दुर्बुद्ध अपनों को तरसता है.

प्यार के प्यासे हिरण बेकल हुए है जल बिना
नाग भौतिक स्वार्थ का अपनत्व डसता है.

ये विसगतियाँ हमारी एक परिपाटी बनी
घर मिला कर्तव्य को, अधिकार बसता है.

द्वेषमय है यह नगर हर मार्ग प्रतिहिंसा भरा
सौमनस् के गाव का अब दूर रस्ता है.

तौलते सम्मान को परिलाभ के अन्धे तराजू
स्नेह महगा है यहाँ, सन्देह सस्ता है.

चौहत्तर

जन्म लेते ही हुआ है जिस तरह अवरुद्ध बचपन
प्राण-पण से लड़ रहा है अस्मिता का युद्ध बचपन.

बढ़ गया परिवेश के भौतिक जलाशय में प्रदूषण
खो गया मासूम, निश्छल विमल जल सा शुद्ध बचपन.

ठोस स्पर्धा में बंधे है पाँव कोमल जन्मते ही
बाध्यताओं से विरत यों ही बना था बुद्ध बचपन.

चित्र, जड आकृति जगत् में ढूँढता संवेदनाएँ
यह सिसकता आत्म केन्द्रित या स्वयं से क्रुद्ध बचपन.

अब नहीं साझे खिलौने, प्यार तीनों पीढ़ियों का
विगत सपना हो गया वह आत्मीय समृद्ध बचपन.

एक बस्ते में असीमित भार कन्धों पर उठाये
आह! असमय ही हुआ है, सर्वहारा वृद्ध बचपन.

पिचत्तर

मधुवनों को वे स्वयं नीलाम-विक्रय कर गये
मधु अभावों पर प्रकट में खेद अभिनय कर गये

सैकड़ों मधु कर्मियों ने जो चमन मधुमय किया
चार दिन में उस चमन को रिक्त कतिपय कर गये.

बाहरी मरकट फलों के वृक्ष पर काबिज़ हुए
सिर्फ पत्तों के लिए इन्सान अनुनय कर गये.

जो कि खाली हाथ आये थे कभी शातिर यहाँ
ज़िन्दगी भर के लिए अतिरिक्त संचय कर गये.

लोक की सारी नियामत ले गये अपने लिये
सन्तवत् हमको रखा परलोक सुखमय कर गये.

चूस कर फेंका जिसे वह आम फिर कोंपल बना
हाय, श्रम के स्रोत से वे लोग परिचय कर गये.

देख कर मासूम माली आम व्यापारी यहां
गुठलियों से पेड़ का निर्बाध विनिमय कर गये.

बोए कोई, काटकर ले जाय कोई क्या पता
किस तरह के तंत्र यह व्यापार अक्षय कर गये.

छियत्तर

किस तरह बदला दिन-रात का मौसम
भावनाओं पर कुठाराघात का मौसम.

एक मुख पर है मुखौटे अनगिनत
अब नही विश्वस्त सच्ची बात का मौसम.

स्वार्थ-पूरित आँधियों ने ही बिगाड़ा है
आदमी के शील और अभिजात का मौसम.

ला रहे है ये कपट के सांवले बादल
आपसी विश्वास पर हिमपात का मौसम.

जो कि तन, मन, प्राण, अन्तस्तल भिगो देती
है कहाँ वह प्यार की बरसात का मौसम.

सतत्तर

सघन उपवन जो सदा पोषण भरण करते रहे
लोग उन वन-सम्पदा का अपहरण करते रहे

जल, हवा, तरु, फूल, फल दूषित बना कर कुछ गए
नाश इस वन भूमि का कुछ अधिकरण करते रहे

जब हरे उद्यान पर डाली गई काली सड़क
सब धरा के लाल उसका अनुसरण करते रहे

कालिखें ढँकती गईं हरियालियों को पास ही
दूर हम 'पर्यावरण' 'पर्यावरण' करते रहे.

क्या बताये क्या किया हमने स्वय के साथ ही
डाल पर बैठे उसी तरु का क्षरण करते रहे

छोड कर उन्मुक्त नदियाँ, खेत, पनघट, गाव, घर
हम नगर के अन्धकारों का वरण करते रहे.

आग का दरिया उफन कर बाढ मे घिरने लगा
नाव पर बारूद की हम सन्तरण करते रहे.

अठत्तर

शब्द बध गये जब बन्धन में
बात रह गई मन की मन में.

सपने जल के अक्षर जैसे
सारे सोच घिरे उलझन में.

कर न सकेंगे जग की बातें
खुद को यदि देखें दरपन में.

खुशबू तक अभिशापित होती
नाग लिपट जाते चन्दन में

बोये थे फूलों के बिरवे
काँटे उग आये आगन में

मौसम के तेवर तो देखो
पत्ते झुलस गये सावन में.

राह खोजने लगे सवेरे
शाम ढल गई बीहड वन में

भाग्य हो गया नागफनी सा
कटी ज़िन्दगी सूनेपन में

जहाँ शुरू था वहीं समापन
आखिर क्या पाया जीवन में.

उन्यासी

पिछली दुस्सह पीडा सह कर लगे जरा सा मन बहलाने
हमे घेर कर खडे हो गये फिर से कितने दुख अनजाने

बीहड पथरीले रस्तो पर जाने कितनी दूर चले हम
हमने पाया चले जहाँ से, पहुच गये फिर उसी ठिकाने.

पैरो मे पड गये फफोले चट्टानो पर चलते-चलते
ऊपर से अन्धड ले आया काँटों की चादर फैलाने

काली रात, भयानक मंजर, घोर अंधेरा, आँधी, ओले
उजले दिन की प्रत्याशा मे क्या भोगा कोई क्या जाने

पर न उगा कोई भी सूरज घोर हताशा के जगल मे
त्रास भरे बादल घिर आये अंधियारो का हाथ बंटाने.

हर बस्ती मे ढूढा हमने अपनापन, अपना सम्बोधन
जाने कब हो गये पराये अपने सब जाने पहचाने.

सूनी राह, न साथ बटोही, और नहीं है अपना कोई
कौन बटाये दर्द, कहे जो अब तो कुछ बैठो सुस्ताने.

अस्सी ·

टुकडों में बटते बटते ही बिखर गया है अपनापन
चटख गया अहसास कहीं से, मन में चुभता अन्तर्मन

आँखों में जगल उग आये होठों पर घिर आई प्यास
तृष्णा की बजर धरती पर नियति बन गई है भटकन.

कधो पर विश्वास उठाये जब तक घर आये मन के
कुछ भी पास नहीं था अपना, विस्थापित थी खुद धड़कन.

खुशियाँ तो बेगानी थीं ही, सुख उधार थे चुका दिये
दुख अपना है वह दे देता अपने हिस्से की तडपन.

पलकों तक आते आते ही सारे सपने टूट गये
जो बाकी थे वे धुधलाये हुई नींद से जब अनबन.

कोई अनुभव बाँध गया था सवदेन के फैले हाथ
अब खुल पाने की कोशिश में कस कस जाते अवगुठन.

सूनापन, बढ़ता सन्नाटा, अनहद चुप्पी, बन्द हवा
इन चारों की बस्ती में क्यों एकाकीपन का चिन्तन.

इक्यासी

यह विकल मन बना क्यों शिव, सर्वथा
भर गई कंठ में तीव्र विष की व्यथा.

छलछलाती रही फेन सी सिसकियाँ
दु खमय सोच का क्षीरसागर मथा

व्यर्थ रिश्ते बिलोते रहे उम्र भर
त्रास-विष के सिवा और कुछ भी न था.

टूटती ही रही डोर अपनत्व की
स्नेह की मथनियाँ हो गई सब वृथा.

यो छिपे स्वर्ण के आवरण में कपट
देव बन कर असुर आ गये हो यथा.

छद्म की मोहिनी ने चला दी यहाँ
रूप से मोह कर छीनने की प्रथा.

अब किसे है समय, कौन सुनता भला
केतु राहू ग्रसित चन्द्रमा की कथा.

तिरासी

मछलियों का जो परस्पर न्याय है
इस जगत् का वह प्रमुख सकाय है

आदमी से बाज होता आदमी
अब कबूतर में अधिक असहाय है

छोड़ते है शब्द अपनी केंचुली
जो कहा है आज, कल मृतप्राय है

गिद्ध सी चितवन हुई पैनी बहुत
मुस्कुराहट घात का पर्याय है.

नीर है या क्षीर यह सापेक्ष्य है
राजहंसो की लचीली राय है.

एक जंगल न्याय की गीता नई
प्रवंचन उन्नीसवाँ अध्याय है.

लक्ष्यवेधक अर्जुनों के सामने
बंद मछली क्या करे, निरुपाय है।

चौरासी

जिन यादों का बोझ सहूँ
किससे उनकी बात कहूँ.

अब अतीत के भूतल से
किस भविष्य की बाह गहूँ.

जिसमें तुम निखरे संवरे
मै उस कल का दरपन हूँ.

अनगिन रेतीले टीले
थोडा जल हूँ कहाँ बहूँ

यों दीवार बनाओ मत
इधर उठाओ उधर ढहूँ.

तुम लौ बने हथेली पर
मैं छोडूँ या हाथ दहूँ.

चाहे नमन करो न करो
मै आशिष हूँ साथ रहूँ

पिच्चासी

जो कभी बिछडे नही वे जोग क्या जाने
वे नदी और नाव का संयोग क्या जाने

जो न मर मर कर जिये होंगे कभी भी
इस तरह की मौत का वे सोग क्या जाने

आँख से ही क्या, हृदय से जो बहे है
वेदना के लाल आँसू ढोंग क्या जाने.

जिन अभागों के दिलो मे घुन लगा है
हो सकेंगे क्या कभी नीरोग, क्या जाने

जिस किसी ने नीद में बरसो गुजारे
हर दिवस, हर रात का उपयोग क्या जाने.

घोर तृष्णा का नही कोई किनारा
जो कि संचय मे लगे उपभोग क्या जाने.

पेट भरने का तरीक़ा पूछ लो इन से
किस तरह निकली गजल ये लोग क्या जाने.

छियासी

प्रदूषित हुई है नगर की हवाएँ
कहाँ सास ले, अब कहा चैन पाएँ

घुमड़ता अधेरा भरी दोपहर मे
धुआँ छोड़ती है बदन की शिराएँ

धरा पर बढा भीड़ का एक सागर
लहर की तरह आदमी छलछलाएँ

असुर वाहनो के निगलते सड़क
अनवरत चल रही दौड-प्रतियोगिताएँ

दुकानें उठा ले गये फूल वाले
वही लोग अब बेचते है दवाएँ.

दिखाई न देते भवर बादलो के
गगन चूमती सिर्फ अट्टालिकाएँ.

नही स्तत्व, अस्तित्व का बोध कोई
यहा खो गई है अहमन्यताएँ.

बना यत्र का एक पुर्ज़ा मनुज ये
भुलाता गया स्नेह, सवेदनाएँ.

सत्यासी

नद मे काग़ज की नौकाएँ
मरुथल मे जैसे तृष्णाएँ

राजमहल मे पलती जैसे
किसी रंक की अभिलाषाएँ

वैसे ही पाली है मैने
अंतिम सासो तक आशाएँ

ऐसे हवन किया अपना मन
डाली हो जल मे समिधाएँ

बहा ले गई ये आहुतियाँ
आंखो से मन की पीडाएँ

घर को पर्णकुटी कर देती
मीठे रिश्तो की कटुताएँ

उग जाती है बिना बीज के
विश्वासो मे जब शंकाएँ

जाने कहाँ छूट जाती है
कहने सुनने की सीमाएँ

ऐसे मे जो कह न सके हम
कह जाती अपनी कविताएँ

अट्यासी

वृक्ष अनगिन चीर देती हाथ की आरी ज़रा सी
घर जलाने को बहुत है एक चिनगारी ज़रा सी

दे रहे सीमित उजाला चाँद, तारे, सूर्य मिल कर
लीलती जग को अकेली रात अँधियारी ज़रा सी

मान लो तो यह पुरुष की अस्मिता को है चुनौती
हर नये इतिहास के पीछे रही नारी ज़रा सी.

एक जुआ है समय, हम जीतते हो जिन्दगी भर
किन्तु सब कुछ हार जाती आख़िरी पारी ज़रा सी.

उम्र भर करता रहा जो परवरिश खुद को मिटा कर
उस बुढ़ापे को बनाती भार बेकारी ज़रा सी.

तुम दुआएँ लो न लो, पर बद्दुआ कोई न लेना
सब मिटा देती किसी की आह दुखियारी ज़रा सी.

नवासी

आशिषें हमको मिली है भर्त्सनाओं की तरह
शाप अब लगने लगे है कामनाओं की तरह.

अब नये सन्दर्भ में ये मूल्य परिभाषित हुए है
फल रहे अन्तर्कलुष अक्षय दुआओं की तरह.

व्रत सभी खंडित हुए सकल्प के अक्षर निरर्थक
जब सहज विश्वास निकले वचनाओं की तरह

शब्द है विषदश, अजगर बन गये सवाद सारे
लोग घर में रह रहे है कन्दराओं की तरह.

कर चुके जीवन हवन जो वश रक्षा के लिये
मूक आहुति पा रहे गुरु की ऋचाओं की तरह.

रक्त में उतरे हुए है स्वार्थ, तृष्णा, दर्प, स्पर्धा
स्नेह के उद्‌गार है अभिनय विधाओं की तरह.

सुख जिसे समझा, बना कर हास्य रूपक मच का
और पीडाएं रही अन्तर्कथाओं की तरह.

नब्बे

साथ है, लेकिन पिछड कर चल रहे है
हम विहित गति मे बहुत असफल रहे है

लग रहा है पाँव है छोटे हमारे,
अन्यथा ये मार्ग तो समतल रहे है.

खोजते थे दृश्य हम नन्दन वनो का
जब कि आँखो में घने जगल रहे है

स्नेह-अमृत से भरा घर चाहते थे
दश विष के चाह का प्रतिफल रहे है

दूर से तो साफ लगते थे घरौदे
क्या पता था साप इनमे पल रहे है.

नभ कहाँ है जान कर भी क्या करे अब
चार टूटे पंख ही सम्बल रहे है

प्यास को स्वीकार हम ने कर लिया, पर
बिम्ब पानी के अभी तक छल रहे है.

इक्यानवें

प्यार के भोले शशक जायें कहाँ
स्वार्थ-परता संक्रमण फैला यहाँ

कलह-विग्रह की विषैली ग़र्द में
बन्द है अपनत्व की सब खिड़कियाँ

रक्तरंजित परस्पर विश्वास अब
बींधते सन्देह, पैनी दृष्टियाँ

एषणाएँ और सुख स्पर्धा बने
व्यंग्य है ईमान, संयम गालियाँ

डर, तनावों से उनींदे घर सभी
द्रोह-दूषण से भरी सब वीथियाँ

काश, हो संकल्प की ठंडी हवा
हटे ऊहापोह का मैला धुआँ

बानवें

प्रगति का युग है चलो स्थापित नया प्रतिमान हो जायें,
जहाँ सब कुछ हुआ है, आदमी भी काश, अब इन्सान हो जायें.

खोजते मूरत, नफ़ासत, हैसियत हर शख़्सियत में पर,
है कहाँ इन्सानियत यह एक अनुसन्धान हो जायें.

आसमाँ तक पास आया पर दिलों में दूरियाँ कितनी,
ग़ज़ब है एक घर में आदमी से आदमी अनजान हो जायें.

पराई बदलियाँ अलगाव का कोई ज़हर बरसा न पायेंगी,
यहाँ पर ठोस है धरती, अगर इस बात का अनुमान हो जायें.

पा रहे सम्मान सुन्दर देह, अभिनय, शोध दुनिया के यहाँ,
अपने बड़ों के स्नेह का भी तो कभी सम्मान हो जायें.

चलो अब सिर्फ़ शब्दों की सतह से अर्थ की तह तक उतर जायें,
मुहब्बत एक प्रचलित शब्द है, अब अर्थ की पहचान हो जायें.

यह नया पदार्पण

हिन्दी में ग़ज़ल विधा अपनी किशोरावस्था में ही है। यद्यपि दुष्यन्त कुमार और सूर्यभानु गुप्त जैसे स्थापित हस्ताक्षरों की हिन्दी ग़ज़लों ने नये आयाम छुए हैं किन्तु जिस वैविध्य और गरिमा की संभावनाएं इस भाषा में और उसके परिवेश में हैं उनकी अवतारणा नहीं हो पाई है।

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में शतक-गणना को छूने वाली जो रचनाएं आपको समर्पित हैं उनमें कुछ ऐसे प्रयोग पहली बार परिलक्षित होंगे जो इस विधा को नई पहचान देते लगते हैं। बहरों और छन्दोविधाओं का भाषा-भंगिमाओं का तथा कथ्य और विषय वस्तु का जिस व्यापक फलक पर वैविध्य इन ग़ज़लों में हैं वह इस विधा को विस्तार और वैशिष्ट्य देता है। उर्दूनिष्ठ हिन्दी के तेवरों के साथ-साथ परिशुद्ध और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की भंगिमाओं में निबद्ध ग़जलें भी इसमें अच्छी संख्या में हैं। विभिन्न मनोभूमियों का निबन्धन तो इनकी व्यापकता और वैविध्य का प्रतीक है ही, शैलीगत नव-प्रयोग भी हिन्दी की प्रकृति में आत्मसात होकर इन्हें एक नया मुहावरा देते हैं।

इनका सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष है इनका अछूता-सा नयापन, प्रांजल अभिव्यक्तियाँ। हिन्दी ग़ज़ल को एक नवाचार और नवाधार इस संग्रह से मिलेगा, इस विश्वास के साथ है यह नया पदार्पण -

मंजुनाथ स्मृति संस्थान
(प्रकाशन अनुभाग) जयपुर

❝ जया जी की ग़ज़ल में ममता का दर्द, अपनेपन के आँसू और समर्पण की आराधना है। अपनी चेतना को वैश्विक चेतना में विलीन करने में उनके शब्द समर्थ हैं, ऐसा मेरा सोचना है। जया जी के इस संग्रह का साहित्य जगत में अकृत्रिम स्वागत होगा इसमें मुझे कोई संदेह नहीं। ❞

ताराप्रकाश जोशी
(सुप्रसिद्ध कवि गीतकार एवं चिन्तक)

❝ 'अभी कुछ दिन लगेंगे' शीर्षक से ग़ज़लों का संग्रह अद्योपान्त एक ही बैठक में पढ़ गया। ...समसामयिक जीवन सन्दर्भों पर सटीक टिप्पणी, मुहावरेदार व्यंग्य के रूप में इन ग़ज़लों में सर्वत्र विद्यमान है और हिन्दुस्तानी ग़ज़लों में उनका यह अनुभव परिपक्व एवं ताज़गी का अहसास कराता है।

इसी ग़ज़ल प्रक्रिया का एक नितांत अछूता व अनूठा पहलू संस्कृतनिष्ठ ग़ज़लों की सृष्टि है। तत्सम हिन्दी का ऐसा स्वाभाविक रचना प्रवाह हिन्दी संस्कृत दोनों में ही दुष्प्राप्य है जया गोस्वामी इस सन्दर्भ में निश्चय ही साधुवाद की हकदार हैं। ❞

प्रकाश परिमल
(सुप्रसिद्ध कवि, समालोचक, एवं वेदविज्ञ साहित्यकार)



जया गोस्वामी

जन्म : जयपुर, 5 फरवरी, 1939

पता : सी-8, पृथ्वीराज रोड, सी-स्कीम, जयपुर 302 001

शिक्षा : प्रारम्भ में स्व. श्री कमलाकर 'कमल' (गुरुजी) द्वारा संचालित 'साहित्य सदावर्त' में हिन्दी साहित्य का अध्ययन

- राजस्थान विश्वविद्यालय से संस्कृत एवं समाजशास्त्र विषयों में एम.ए.
- 'वैदिक सौर देवता' विषय पर शोध-कार्य

उपलब्धि : 'ज्ञानोदय', 'अणिमा', 'पत्रिका' आदि पत्र-पत्रिकाओं में कविता, ग़ज़ल, लेख आदि का प्रकाशन एवं अनवरत स्फुट लेखन

- आकाशवाणी जयपुर से वार्ताओं का सतत प्रसारण
- क्राफ्ट एवं चित्रकला में गहरी अभिरुचि तथा 'शिल्पांकन' नामक मौलिक शैली का प्रवर्तन
- ललित कला अकादमी एवं सूचना केन्द्र कलादीर्घाओं में चित्रों की एकल प्रदर्शनियां (1976 से पूर्व)
- निकट भविष्य में गेय ग़ज़लों व गीतों का संग्रह शीघ्र प्रकाश्य
- सम्प्रति राजस्थान आवासन मंडल में वरिष्ठ कार्मिक प्रबंधक पद पर कार्यरत
- संपर्क सूत्र : फोन : 0141-373934